अल्ली तुन पुटतु पेन्सिल

एक चित्रकथा

गोंडी भाषा में

एकलव्य

चित्र एवं कहानी - वी सुतेयेव

अल्ली तुन पुटतु पेन्सिल
चूहे को मिली पेंसिल (गोंडी)
CHUHE KO MILI PENCIL (GONDI)
स्टोरीज़ एण्ड पिक्चर्स की एक चित्रकथा प्रगति प्रकाशन, मॉस्को के सौजन्य से प्रकाशित।
चित्र और कहानी: वी सुतेयेव

हिन्दी से गोंडी अनुवाद: दुर्गा धुर्वे, अमरवती धुर्वे
संयोजन: आकाश मालवीय, अशोक हनोते, हेमराज मालवीय, खेमप्रकाश यादव, निदेश सोनी, राजेन्द्र देशमुख, सुनील हनोते
सम्पादकीय व उत्पादन सहयोग: अपूर्वा राजे, इन्दु श्रीकुमार व कमलेश यादव

एचटी पारेख फाउंडेशन के वित्तीय सहयोग से विकसित
यह किफायती संस्करण अँग्रेज़ी, हिन्दी व कोरकू में भी उपलब्ध है।

पहला संस्करण: मार्च 2023/8000 प्रतियाँ
कागज़: 100 gsm मेपलिथो पर प्रकाशित
ISBN: 978-93-94552-38-8
मूल्य: 12.00

प्रकाशक: एकलव्य फाउंडेशन
जमनालाल बजाज परिसर,
जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 - 297 7770, 71, 72
www.eklavya.in/books@eklavya.in

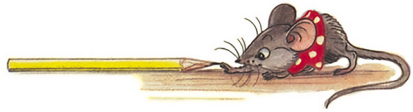

मुद्रक: आर के सिक्युप्रिंट प्रा लि, भोपाल फोन: +91 755 - 2687 589

उंदी बार उंदी अल्ली तिन्दाले बांगे मिरकन्दु। वोन उंदी पेन्सिल पुटतु।

अल्ली पेन्सिल अरिकुन वोना रोते सोड़ीसेतुल नाकुन छोड़ी किसिम, “नाकुन ह्न्दा सीम, पेन्सिल अल्लीन गिड़गिड़े मसिकुन वन्कतुल। अना निवा बां काम ता हईन्दन, कटिया ता टुकड़ा आन्दन। तिन्द्की ते भी अल मिन्गाका।”

“अना निकुन कुतरिकिका” अल्ली वन्कतु। “नाकुन नावा पल्क तिक्को उन्डे चुड्डोल ईर्रिले, हरबप्पोरे बान्गें न बान्गें कुतरिकियाना अर्रिता।” उन्डे, अल्ली पेन्सिल कतरी कियाना शुरु किसित।

“ऊई! अना नोइतोना,” पेन्सिल ईत्तु। “नाकुन उंदी बार आखिरी चितुर बनकिया सीम, फिर निकुन जो कियाना।”

“किसी दाकि ठीक हई,” अल्ली ईत्तु, “इमा चितूर बनी किसेना। फिर निवा अन्ना चबले किसिकुन टुकड़ागं-टुकड़ागं किका।”

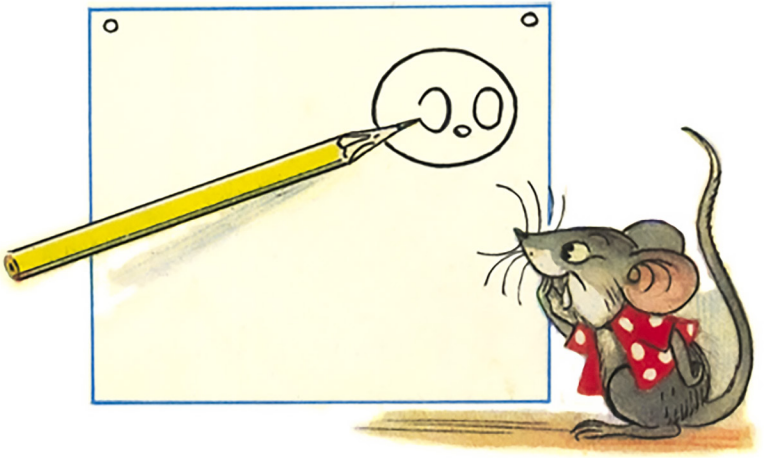

पेन्सिल ठंडो साँस ऐतु। उंडे उंदी फड़ा गोला बनी कित उंडे फड़ा गोला ते रोपा मूंद चुड्डोक गोला बनिकितु।

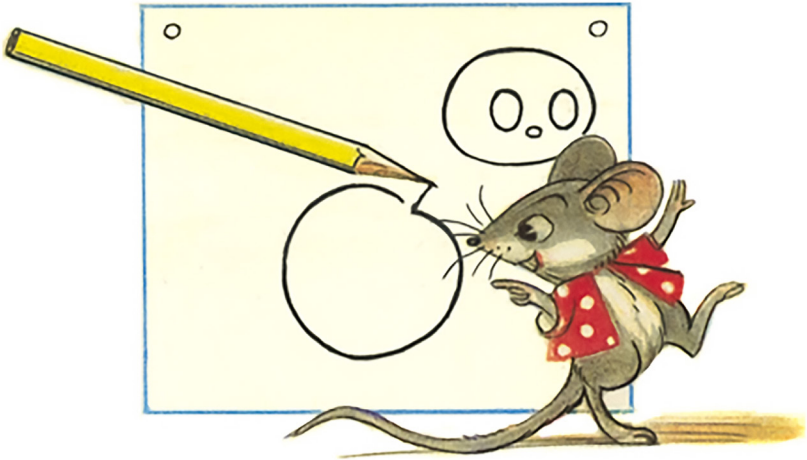

“हाँ इद पनीर ही दिसिता” अल्ली ईत्तु। “अग्गी नाकुन अव छेद दिसितांग हई।”

“दाते, अपन पनीर ता छेद ईंद्कटा” पेन्सिल मानिकिसेत उंडे अद फड़ा गोला ते निचो उंदी उंडे फड़ा गोला बनेकितु।

“अरे इद तो सेब हई,” अल्ली चेहकेमातु। “हां इदेन सेब इन्दकट पेन्सिल इत्तू।” पेन्सिल फिर दुसरो फड़ा गोलन करुंम ते बांगे अजिबतल चितूर बनी कियालातु।

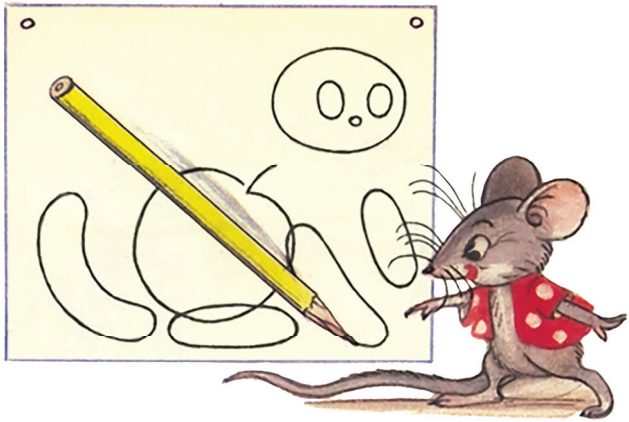

“अरे वा। इंगा तो नाकुन मज़ा ही वासत। इद तो चमचम हई।” अल्ली ना टोड्डी ते ऐर वाइलातु। “जल्दी कीम। नाकुन तिन्दाना हई।”

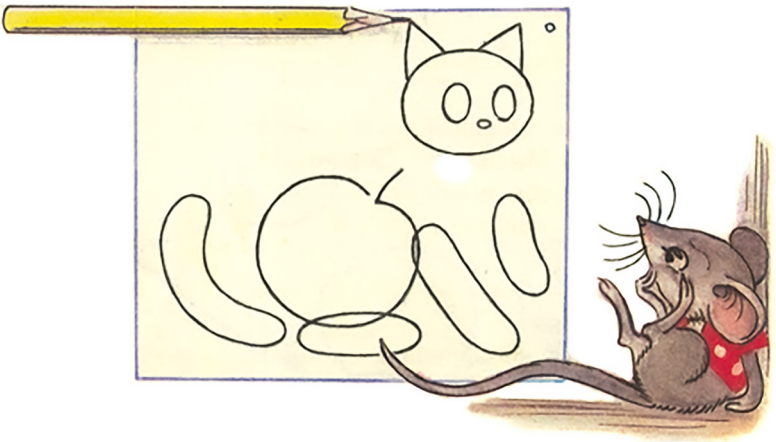

पेन्सिल ता पर्रो वाले गोला ते पर्रो रंड चुडोक तिकोना बने किसित। अरे, अरे!" अल्ली किर्रेमातु। "इंगा तो इमा बिलान लेका बनिकियातोनी उंडे मुने मन बनकेमा।"

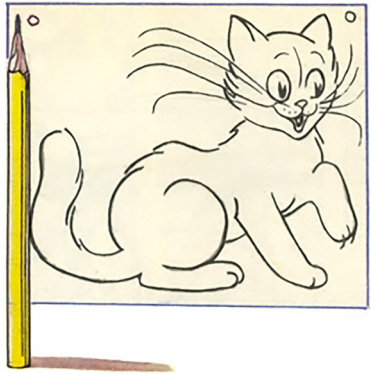

मने पेन्सिल बनिकिताके हत्तु। अदेन पर्रो ता गोला तल
लम्बो मूँछेन्ग उंडे टोड्डी बने कित।
अल्ली वरीसिकुन किर्रेमातु, “ओ दादा रो। इत तो
असली ता बिलाल लागिता हई बचेकिम।”

ऐहुन वंकिसीकुन वोल
विच्चिकुन वोना रोते
रोपा सोंड़ीसेतुल।

बां इमा इताल बिलाना
चितूर बनीकिसी सकेमाई,
अदेन हुड़सिकुन अल्ली
वरिसिसकेमाई।

मध्य प्रदेश में बैतूल क्षेत्र में बोली जाने वाली गोंडी भाषा पर आधारित

H T Parekh FOUNDATION
An Initiative by HDFC WITH YOU, RIGHT THROUGH
एकलव्य
मूल्य: ₹ 12.00
ISBN: 978-93-94552-38-8